द्रव्यगुण

भाग–1

प्रश्नोत्तरी

द्रव्यगुण भाग–1
अनुक्रमणिका

क्रम संख्या		पृ० संख्या
1.	प्रश्न :– किन्हीं चार का उत्तर लिखो? 1. विपाक की उपलब्धि, 2. रस एवं दोषों का सम्बन्ध, 3. द्रव्यगुण शास्त्र का लक्षण, 4. उत्पत्ति भेद से द्रव्य वर्णन, 5. लेखनीय गण कर्म, 6. विचित्र प्रत्यारब्ध।	1
2.	प्रश्न :– संक्षिप्त उत्तर लिखो? 1. रस विषयक निमि एवं वार्योविद का मत, 2. व्यवायी गुण कर्म, 3. प्रमाथी सोदाहरण वर्णन करो, 4. वीर्योपलब्धी, 5. स्पष्ट करो–यथा प्रोक्ता हरीतकी।	2
3.	प्रश्न :– सामान्य उत्तर लिखो? 1. सप्त पदार्थ, 2. दशमूल गुण कर्म, 3. जांगल देश लक्षण, 4. अनुपान, 5. अधोभक्त भेषज काल, 6. द्रव्य पर्याय का आधार, 7. विपाक का तारतम्य।	3
4.	प्रश्न :– संक्षिप्त उत्तर स्पष्ट करो? 1. रसों की भौतिक निष्पत्ति, 2. मन्द–तीक्ष्ण तथा स्निग्ध–रूक्ष गुण की कार्मुकता, 3. अमीमांस्य कर्म, 4. चरकानुसार औषध काल, 5. श्रेष्ठ अनुपान।	4
5.	प्रश्न :– रसों का औषध प्रयोग क्रम लिखो?	6
6.	प्रश्न :– स्रंसन एवं भेदन में अन्तर स्पष्ट करो?	6
7.	प्रश्न :– संक्षिप्त उत्तर लिखो? 1. मूत्र विरजनीय द्रव्यों की क्रिया, 2. अष्ट वर्ग के प्रतिनिधि, 3. पञ्च पल्लव गुणकर्म, 4. पञ्च वल्कल, 5. शारंगधरोक्त भेषज सेवन काल।	6
8.	प्रश्न :– सूत्र स्पष्ट करो? दन्ती रसाद्यैः तुल्यापि।	7
9.	प्रश्न :– प्रशस्त भेषज के कार्य लिखो?	8
10.	प्रश्न :– योनि भेद से द्रव्य वर्गीकरण लिखो?	8
11.	प्रश्न :– संक्षिप्त उत्तर लिखो? 1. चरकोक्त गुणों की विशेषता लिखो?	8
12.	प्रश्न :– संक्षिप्त उत्तर लिखो– 1. विरुद्धाहार के दुष्परिणाम, 2. चरकोक्त जीवनीय गण के द्रव्य, 3. सुश्रुतोक्त वचादि गण के द्रव्य, 4. अनुलोमन, स्रंसन, भेदन आदि अधोभागहर कर्मों का परिचय दें?	9
13.	प्रश्न :– स्पष्ट करो संयोगे च विभागे च..... स्पष्ट करो?	10

14.	प्रश्न :- कषाय रस भूताधिक्य एवं गुणाधिक्य का तारतम्य लिखो?	10
15.	प्रश्न :- संक्षिप्त उत्तर लिखो-1. अंगमर्द प्रशमन गण के तीन द्रव्य लिखो?	10
16.	प्रश्न :- संक्षिप्त उत्तर लिखो- 1. नाड़ीवह संस्थान पर कार्य करने वाले द्रव्य लिखो?	12
17.	प्रश्न :- वीर्यन्तु क्रियते येन या क्रिया स्पष्ट करो?	13
18.	प्रश्न :- संक्षिप्त उत्तर लिखो- 1. प्रभाव जन्य कर्मों का वर्णन करो?	13
19.	प्रश्न :- किंञ्चिद रसेन कुरुते कर्म वीर्येण चापरम् स्पष्ट करो?	14
20.	प्रश्न :- संक्षिप्त उत्तर लिखो 1. संज्ञास्थापन सोदाहरण स्पष्ट करो?	14
21.	प्रश्न :- निम्नलिखित द्रव्यों की निरूक्ति एवं कार्मुकता लिखो? प्रमाथी, लेखन, प्रदीपक।	15
22.	प्रश्न :- प्रदीपक निरुक्ति एवं कार्मुकता लिखो? 1. दीपनं अन्तरग्नेः संधुक्षणं तस्मै हितं दीपनीयम् (यो०) 2. वह्ने रूद्दीपनम् हितम् (भा०)	16
23.	प्रश्न :- चरकोक्त शोथहर गण के कार्य लिखो?	16
24.	प्रश्नः- अष्टविध वीर्यवाद की मान्यता में युक्ति लिखो?	16
25.	प्रश्न :- सोदाहरण स्पष्ट करें-अर्शोघ्न कर्म, वर्ण्य, कृमिघ्न?	16
26.	प्रश्न :- निम्नलिखित का संक्षिप्त उत्तर लिखो- 1. सुश्रुतोक्त काकोल्यादिगण के द्रव्य लिखो?	17
27.	प्रश्न :- निम्नलिखित का संक्षिप्त उत्तर लिखो-1. पञ्चतिक्त, 2. चरकोक्त आहार द्रव्य वर्गीकरण, 3. दशमूल के गुण कर्म, 4. सूत्र स्पष्ट करो?	18
28.	प्रश्न :- प्रभाव परिभाषा एवं उदाहरण लिखो?	18
29.	प्रश्न :- पांच पंक्तियों में उत्तर लिखो? आत्मगुण, अवस्थापाक, निष्ठपाक, दोनों में अन्तर, चरकोक्त अर्शोघ्नगण।	19
30.	प्रश्न :- संक्षिप्त उत्तर लिखो? 1. द्रव्य संग्रह का नक्षत्र सम्बन्ध बताइये?	20
31.	प्रश्न :- स्पष्ट करें-विरुद्ध गुण संयोगे भूय साऽल्प हि जायते।	21
32.	प्रश्न :- तीक्ष्ण विरेचन द्रव्यों की कार्य मीमांसा लिखो?	22
33.	प्रश्न :- द्रव्य एवं ड्रग शब्द की व्याख्या करो?	22
34.	प्रश्न :- रस अतिसेवन जन्य विकार एवं रस गण लिखो?	22
35.	प्रश्न :- परादि गुणों का चिकित्सा में महत्व लिखो?	23
36.	प्रश्न :- रस रूपान्तरण का कारण या अन्यथा गमनत्व समझाइये?	23
37.	प्रश्न :- किन्हीं चार का उत्तर लिखो?	24
38.	प्रश्न :- दोष विकारों में रसों का प्रयोग क्रम बताइये?	25
39.	प्रश्न :- आहार में रसों का प्रयोग क्रम लिखो?	25

द्रव्यगुण भाग–1
प्रश्नोत्तरी

प्रश्न :–किन्हीं चार का उत्तर लिखो? 1. विपाक की उपलब्धि, 2. रस एवं दोषों का सम्बन्ध, 3. द्रव्यगुण शास्त्र का लक्षण, 4. उत्पत्ति भेद से द्रव्य वर्णन, 5. लेखनीय गण कर्म, 6. विचित्र प्रत्ययारब्ध।

उत्तर :– 1. विपाक की उपलब्धि– शरीर में ग्रहण किये आहार एवं औषध की प्रक्रिया का प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं होता, शरीर में होने वाले लक्षण एवं कर्मों के आधार पर अनुमान द्वारा उपलब्धि होती हैं, मधुर, अम्ल एवं कटु विपाक का, दोष धातु वर्णन, विकार शान्ति एवं मलमूत्र की क्रिया से प्राय: अनुमान हो जाता है। ग्रहण की गई औषध के विपाक से रोग के लक्षणों में कमी या रोग शान्ति से भी ज्ञान हो जाता है। यही विपाक की उपलब्धि है।

2. रस एवं दोषों का सम्बन्ध– प्रतिदिन के आहार विहार एवं क्रिया कलाप तथा ऋतु परिवर्तन के कारण दोष वृद्ध एवं क्षीण होते रहते हैं। इनको बढ़ाने एवं कम करने में रसों का विशेष महत्व है। रस छ: होते है मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय। इनमें से तीन तीन रस दोषों को बढ़ाने वाले एवं कम करने वाले होते हैं यथा :–

मधुर अम्ल, लवण–**कफवर्धक–वात शामक**

कटु तिक्त कषाय–**वात वर्धक–कफ शामक**

अम्ल, लवण कटु–**पित्त वर्धक**

मधुर तिक्त कषाय–**पित्त शामक होते हैं।**

अत: रस एवं दोषों का शरीर में दोष धातु सम रखने में विशेष सम्बन्ध है।

3. द्रव्यगुण शास्त्र के लक्षण– जिस शास्त्र में आहार एवं औषध रूप में प्रयुक्त सभी द्रव्यों के रस, गुण, वीर्य, विपाकादि सहित विवेचन किया गया हो उसे द्रव्यगुण शास्त्र कहते हैं।

द्रव्याणां गुणकर्माणि प्रयोगाविविधा स्तथा।
सर्वसो यत्र वर्तन्तेशास्त्रं द्रव्यं गुणं हि तत्।। (प्रियव्रत शर्मा जी)

4. उत्पत्ति भेद से द्रव्य वर्णन – सभी द्रव्यों की उत्पत्ति में पंचमहाभूत कारण होते हैं अत: सभी द्रव्य पांच भौतिक है।

पार्थिव– जिन द्रव्यों में पृथ्वी महाभूत का लगभग आधा भाग हो तथा आधे में अन्य महाभूत हो वह पार्थिव है। जैसे सूखे द्रव्य खनिज आदि।

आप्य– जिन द्रव्यों में जल महाभूत विशेष हो वे आप्य कहलाते हैं धनिया (हरा), पुदिना आदि।

तैजस– जिन द्रव्यों में अग्नि महाभूत की अधिकता हो वे तैजस कहलाते है चित्रक आदि।

वायव्य– जिन द्रव्यों में वायु महाभूत की अधिकता हो वे वायव्य कहलाते हैं श्यामक, जौ, सूखे शाक आदि।

आकाशीय– जिन द्रव्यों में आकाश महाभूत की अधिकता हो वे आकाशीय कहलाते हैं जैसे लघु गुण एवं तिक्त रस वाले द्रव्य।

स्थान भेद से उत्पत्ति :

1. **जलज**– जल में उत्पन्न होने वाली वनस्पतियाँ जैसे कमल, कमोदिनी, काई।

2. **स्थलज**– वनस्पति, वानस्पत्य, वीरूध एवं औषध ये चारों बड़े वृक्ष, क्षुप एवं लताएं।

3. **वृक्षरूह**– वृक्षों पर बांदे के रूप में उत्पन्न होने वाली वनस्पति, अमर बेल आदि।

4. **लेखनीय गण वर्णन**– जो द्रव्य अपने प्रभाव से शरीर की बढ़ी हुई मेदा को सुखाकर शरीर पतला करे अथवा मेदा को बाहर निकाल दे वे लेखनीय कहे जाते हैं जैसे मोथा, कूठ, हल्दी, वच, अतीस, कुटकी, चित्रक, तथा शल्य की दृष्टि से जो द्रव्य व्रण एवं त्वचा पर उभरे हुए मांस को खुरच कर निकाल दें उन्हें भी लेखन द्रव्य कहा जाता है।

5. **विचित्र प्रत्ययारब्ध**– सृष्टि के समस्त द्रव्य तथा रस, गुण, वीर्य, विपाक सभी पांच भौतिक संगठन से बने होते हैं। वाग्भट ने प्रभाव को स्पष्ट करते हुए संगठन दो प्रकार का बताया है-समान प्रत्ययारब्ध एवं विचित्र प्रत्ययारब्ध।

जहां द्रव्य को बनाने वाले महाभूत एवं उसमें होने वाले रसादि को बनाने वाले महाभूतों का संगठन एक ही प्रकार का हो वह समान प्रत्ययारब्ध है। इससे वह अपने रस, वीर्य, विपाक के अनुरूप का कार्य करता है।

जहां द्रव्यों के आरम्भ महाभूत एवं द्रव्यों के रसादि के महाभूत भिन्न भिन्न हो तब वह अपने रसादि के विपरीत प्रभाव दिखाता है। यही विचित्र प्रत्ययारब्ध है जैसे गेहूं एवं जौ दोनो मधुर रस एवं गुरु गुण वाले होते हैं अत: गेहूं अपने समान प्रत्ययारब्ध के कारण वात का शमन करता है जबकि जौ विचित्र प्रत्ययारब्ध होने के कारण रस एवं गुण के विपरीत वात की वृद्धि करता है। इसी प्रकार दन्ती, कटु रस, उष्णवीर्य एवं कटु विपाकी होने पर भी विरेचन करती है जबकि चित्रक कटु, उष्ण एवं कटु विपाक वाली होने पर समान प्रत्ययारब्ध के कारण दीपन कर्म करती है। यह विचित्रता महाभौतिक संगठन की भिन्नता से होता है।

प्रश्न :– संक्षिप्त उत्तर लिखो? 1. रस विषयक निमि एवं वार्योविद का मत, 2. व्यवायी गुण कर्म, 3. प्रमाथी सोदाहरण वर्णन करो, 4. वीर्योपलब्धी, 5. स्पष्ट करो-यथा प्रोक्ता हरीतकी।

उत्तर :– 1. रस विषयक निमि एवं वार्योविद का मत– (क) वैदेह निमि ने रस सम्भाषा में अपना मत रखते हुए मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय के साथ क्षार को रस मानते हुए रस सात बताये हैं क्षार द्रव्य होने से आत्रेय ने इसका खण्डन कर दिया। अत: यह पृथक रस नहीं हो सकता।

(ख) वार्योविद ने रस तो छ: ही बताये है यथा गुरु लघु, शीत उष्ण एवं स्निग्ध रूक्ष। वास्तव में ये गुरु आदि गुण है-तथा इनका रसना से ग्रहण नहीं होता अत: आत्रेय ने इन्हें गुण मानते हुए मत का खण्डन कर दिया।

2. **व्यवायी गुण का वर्णन**– जो द्रव्य शरीर में प्रविष्ट होने पर पचने से पूर्व ही शरीर में शोषित होकर सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त हो जावे तथा उसके बाद पाक हो उसे व्यवायी कहते हैं। ऐसे द्रव्यों में वायु और आकाश महाभूत के गुणों की अधिकता होती हैं। जैसे भांग, अफीम आदि।

3. प्रमाथी– जो द्रव्य अपने तीक्ष्ण कटु गुण एवं उष्ण वीर्य के प्रभाव से स्रोतों को मथकर मल को बाहर निकाले वे प्रभाथी कहे जाते हैं जैसे वचा, काली मरिच आदि।

4. वीर्योपलब्धी– वीर्य की उपलब्धि अर्थात् ज्ञान प्रत्यक्ष एवं अनुमान दोनों से होता है। चरक में लिखा है कि-**वीर्य यावदधीवासन्निपाताच्चोपलभ्यते। (च०सू०27)**

त्वचा के संपर्क से प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान होता है। कुछ द्रव्यों के वीर्य का ज्ञान शरीर में उसकी उपस्थिति से भी होता है यह उसके कर्मों के अनुमान से होता है। कभी कभी दोनों से भी उपलब्धी होती है उदाहरण के अनुसार-

1. निपात का ज्ञान मरिच प्रयोग से प्रत्यक्ष होता है।
2. शरीर में अधिवास उपस्थिति उष्ण आनूप मांस के अनुमान से।
3. मरिच का निवात एवं अधिवास प्रत्यक्ष अनुमान दोनों से होता है जिह्वा के संसर्ग एवं शरीर की उष्णता से।
4. **यथाप्रोक्ताहरीतकी**– शारंगधर में अनुलोमन की परिभाषा में **तच्चानुलोमनं ज्ञेयं यथा प्रोक्ताहरीतकी। (शा०)** जो द्रव्य मल मूत्रादि को पकाकर उनके बंध को ढीला करके तथा वातादि दोषों को पृथक कर मृदु रेचन करने वाले हों तथा उन द्रव्यों के प्रयोग से पुरीष कोमल हो वे अनुलोमक है जैसे हरड़। तथा इसके प्रभाव से आंतो की पुरसरण गति भी थोड़ी बढ़ जाती है। इसमें मल पक्व ही आता अत: ये अनुलोमक है। जौ, हरड़, एरण्ड तैल, अंजीर आदि। इन द्रव्यों को कही सर भी कहा गया है।

प्रश्न :– सामान्य उत्तर लिखो? 1. सप्त पदार्थ, 2. दशमूल गुण कर्म, 3. जांगल देश लक्षण, 4. अनुपान, 5. अधोभक्त भेषज काल, 6. द्रव्य पर्याय का आधार, 7. विपाक का तारतम्य।

उत्तर :– सप्त पदार्थ– द्रव्य, गुण, रस, वीर्य, विपाक एवं प्रभाव एवं कर्म ये सप्त पदार्थ है।

1. **द्रव्य,** गुण एवं कर्म जिसमें रहते है वह द्रव्य है।

2. **रसनार्थो रस:** रसना (जिह्वा) से जिसका ज्ञान होता है वह रस है।

3. **गुण** जो द्रव्य में आश्रित हो स्वयं निर्गुण एवं क्रियाहीन हो वह गुण है।

4. **वीर्य**– जिस शक्ति के द्वारा द्रव्य अपना कार्य करता है उस शक्ति को वीर्य कहते है ये शीत एवं उष्ण दो स्वरूप वाली है।

5. **विपाक**– जठराग्नि के सम्पर्क में आने पर जिस रस विशेष की उत्पत्ति होती है वह विपाक है यह मधुर, अम्ल एवं कटु तीन प्रकार का है।

6. **प्रभाव**– दो द्रव्यों में समान रस, वीर्य, विपाक होने पर भी जब द्रव्य का विशेष कर्म दिखाई देता है उसे प्रभाव कहते हैं इसे द्रव्य की विशेष शक्ति भी कहा है। यथा चित्रक एवं दन्ती समान होते हुए भी दन्ती रेचक है चित्रक नही।

7. **कर्म**– संयोग विभाग का कारण, द्रव्य में रहने वाला तथा कर्तव्य के लिए की जाने वाली चेष्टा को कर्म कहते हैं।

2. दशमूल गुण कर्म– लघु पंचमूल एवं बृहत् पञ्चमूल दोनों को मिलाने से दशमूल बनता है।

गुणकर्म– यह त्रिदोषघ्न एवं आमपाचक है, यह श्वास, कास, शिर:शूल, तन्द्रा, शोथ, ज्वर, आनाह, पार्श्वशूल तथा अरुचि को भी दूर करता है।

3. जांगल देश लक्षण– जिस भूभाग में वृक्ष एवं जल कम हो, वायु अधिक तेज चलती हो, धूप तीक्ष्ण हो, वह जांगल देश कहलाता हैं। यहां के मनुष्य वातपित्त बहुलता वाले होते हैं। यहां के द्रव्य कषाय रस प्रधान, खदिर, धव आदि विशेष रूप से होते है। यहां आनूप की अपेक्षा रोग कम होते हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम हैं। कम पत्तियों एवं कांटेदार वृक्ष अधिक होते हैं जैसे शमी, बबूल, नागफनी आदि।

4. अनुपान– औषध के साथ एवं औषध सेवन के बाद जिस तरल (मधु, उष्ण जल, दूध आदि) का प्रयोग किया जाता है उसे अनुपान कहते हैं। **'अनु सह पश्चात् वा पीयते इति अनुपानम्'** दोष, रोग एवं देश तथा औषध की दृष्टि से इनका उपयोग किया जाता है औषध को यथा स्थान पहुंचाने में अनुमान माध्यम का काम करते हैं।

5. अधोभक्त भेषज काल– सुश्रुत में औषध लक्षण के 10 कालों का वर्णन किया है। इनमें जो औषध, भोजन करने के बाद ली जाती है उसे **अधोभक्त** कहते हैं उदान एवं अपान वायु विकार में दी जाने वाली औषध सांयकाल भोजन के बाद दी जाती है तथा कफ एवं ऊर्ध्व भाग के रोग शमन हेतु तथा व्यान विकार होने पर दोपहर भोजन के बाद औषध दी जाती है।

6. द्रव्य पर्याय का आधार– द्रव्य के पर्याय उसकी विशेषता, गुण, स्वरूप, देश, काल, वीर्य, रस, गन्ध, कर्म एवं प्रभाव की दृष्टि से दिये गये नाम ही पर्याय के आधार है। जैसे-मूषाकर्णी, पंचांगुल (एरण्ड उपमा-स्थान की दृष्टि से, मागधी(पिप्पली) द्राविडी (एला) कास, वर्षाभू, शारदी, तिक्त, वाजिगंधा, उष्णा, पुत्रदा, कुष्ठघ्नी आदि। इसी प्रकार बोधि वृक्ष (पीपल), कर्म की दृष्टि से अर्शोघ्न, शोथघ्नी, बला आदि नाम, चित्रक, अग्नि वाचक नाम, नागरमोथा, बादल के पर्यायवाची आदि भी गुण, कर्म एवं स्वरूप की दृष्टि से बताये नाम है।

7. विपाक का तारतम्य– रसों के समान विपाक में भी तारतम्य होता है। गंगाधर जी ने लिखा है कि जब रस प्रवर होगा तो विपाक भी प्रवर होता है तथा रस के अवर होने पर विपाक भी अवर होता है। तीनों विपाकों में भी तारतम्य बताया गया है-मधुर रस का मधुर विपाक उत्तम, अम्ल रस का मधुर विपाक मध्यम तथा लवण रस का मधुर विपाक अवर होता है। यही स्थिति कटु विपाक में देखी जाती है कषाय से उत्पन्न विपाक उत्तम, कटु का विपाक मध्यम तथा तिक्त का अवर होता है। इसी प्रकार विपाक पर स्निग्ध, रूक्ष आदि गुणों का भी विपाक पर प्रभाव पड़ने से तारतम्य बदल जाता है।

प्रश्न :- संक्षिप्त उत्तर स्पष्ट करो? 1. रसों की भौतिक निष्पत्ति, 2. मन्द-तीक्ष्ण तथा स्निग्ध-रूक्ष गुण की कार्मुकता, 3. अमीमांस्य कर्म, 4. चरकानुसार औषध काल, 5. श्रेष्ठ अनुपान।

उत्तर :- 1. रसों की भौतिक निष्पत्ति क्रम– रसों के कार्य देखकर एवं गुण की दृष्टि से उनके उत्पादक महाभूतों का ज्ञान हो जाता है। इनके सेवन से दोष एवं धातुओं में जो परिवर्तन, परिवर्धन होता है उनसे भी महाभूतों का अनुमान हो जाता है।

चरक, सुश्रुत एवं वाग्भट के वर्णन में रसों की निष्पत्ति में महाभूतों की कारकता का वर्णन किया है। यद्यपि तीनों ही का वर्णन समान ही है किन्तु अधिकता की दृष्टि से महाभूत प्रवरावर की दृष्टि से बताये है-

	चरक	**सुश्रुत**	**वाग्भट**
मधुर	जल+पृथ्वी	पृथ्वी+जल	पृथ्वी+जल
अम्ल	पृथ्वी+अग्नि	पृथ्वी+अग्नि	पृथ्वी+अग्नि

लवण	जल+अग्नि	जल+अग्नि	जल+अग्नि
कटु	वायु+अग्नि	वायु+अग्नि	अग्नि+वायु
तिक्त	वायु+आकाश	वायु+आकाश	आकाश+वायु
कषाय	वायु+पृथ्वी	वायु+पृथ्वी	पृथ्वी+वायु

2. मन्द तीक्ष्ण तथा स्निग्ध रूक्ष गुण की कार्मुकता –

मन्द गुण– शमन करने की शक्ति वाले गुण मन्द कहे जाते हैं। ये पृथ्वी एवं जल महाभूत की प्रधानता वाले होते हैं। ये विषम दोषों को शम करते हैं तथा शरीर में स्थूलता उत्पन्न करने वाले होते हैं।

तीक्ष्ण गुण– जिस द्रव्य में शोधन की शक्ति हो वह तीक्ष्ण गुण वाला होता है। ये द्रव्य शोधन के साथ कार्श्य उत्पन्न करने वाले भी होते हैं।

स्निग्ध– क्लेदन की शक्ति वाले द्रव्य स्निग्ध गुण वाले होते हैं। ये शरीर में स्निग्धता एवं नमी उत्पन्न करते हैं चक्षु तथा स्पर्श ग्राह्य भी बताये गये हैं तथा शरीर में वर्ण उत्पन्न करते हैं।

रूक्ष– शोषण की शक्ति वाले द्रव्य रूक्ष होते हैं इनमें शरीर में रूक्षता, शुष्कता एवं कठिनता उत्पन्न करने वाला गुण है।

3. अमीमांस्य कर्म :–

द्रव्य के अचिन्त्य प्रभाव को अमीमांस्य कहते हैं। इसी अचिन्त्य शक्ति को प्रभाव कहा है (चरक)। वाग्भट ने इस अमीमांस्य शक्ति को अचिन्त्य प्रभाव होने से सिद्ध करते हुए विचित्र प्रत्ययारब्ध कहा है। जिस द्रव्य को बनाने वाले महाभूत एवं उसके रसावीर्य विपाक को बनाने वाले महाभूत समान हों तब चिन्त्य प्रभाव होता हैं किन्तु जहां प्रभाव भिन्न हो वहां द्रव्य एवं रसादि बनाने वाले महाभूतों के संगठन में भिन्नता ही विशेष कारण है। दन्ती एवं चित्रक रसवीर्य एवं विपाक में समान होने पर भी चित्रक अग्नि दीपक है तथा दन्ती विरेचक है।

4. चरकानुसार औषध काल :–

औषध ग्रहण के चरक ने 10 वालों का वर्णन किया है–

भैषज्यकालो भुक्तादौ मध्ये पश्चान्मुहुर्मुहुः।
सामुद्गं भक्तसंयुक्त ग्रास ग्रासान्तरे दशः।। (च०चि०30)

1. भोजन के पूर्व, 2. भोजन के मध्य, 3. भोजन के पश्चात्, 4. बार बार, 5. दो आहार के मध्य, 6. भोजन के साथ, 7. भोजन के ग्रास में मिलाकर, 8. दो ग्रासों के बीच में, 9. बलवान बिना भोजन किये तथा 10 दुर्बल लघु पथ्य लेकर औषध लेवे।

5. श्रेष्ठ अनुपान :–

सामान्य रूप से जल (उष्ण या शीत), मधु एवं दुग्ध औषध के अनुपान कहे हैं। श्रेष्ठता की दृष्टि से **वातज** विकारों में स्निग्ध एवं उष्ण अनुपान, **पित्तज** विकारों में मधुर एवं शीतल अनुपान तथा कफज रोगों में रूक्ष एवं उष्ण अनुपान का प्रयोग सुश्रुत ने बताया है। (सु०सू० 46) यही सर्वथा श्रेष्ठ अनुपान है।

औषध की प्रकृति के अनुसार– स्नेह का उष्ण जल

रोगी की दृष्टि से– कृश के लिए सुरा एवं स्थूल के लिए मधूदक।

रोग की दृष्टि से– रक्तपित्त में दूध या गन्ने का रस तथा

विष विकारो में– शिरीष क्वाथ। (ये भी श्रेष्ठ अनुपान है।)

प्रश्न :– रसों का औषध प्रयोग क्रम लिखो?

उत्तर :– चरक एवं वाग्भट ने शरीर में दोषों से उत्पन्न विकारों की शान्ति के लिए चिकित्सा कर्म में रसों के प्रयोग का क्रम बताते हुए लिखा है कि–कफज व्याधियों में कटु, तिक्त एवं कषाय रस का युक्ति पूर्वक प्रयोग करना चाहिए यथा सर्वप्रथम कटु रस का प्रयोग करने से कफ की पिच्छिलता एवं गुरु भाव नष्ट होते हैं। तिक्त का इसके बाद प्रयोग करने से मुख का मीठापन दूर होता है तथा यह कफ का शोषण भी करता है इसके बाद कषाय रस के प्रयोग से कफ की स्निग्धता नष्ट हो जाती हैं निकलता हुआ कफ रुक जाता है।

पित्तज विकारों में तिक्त मधुर कषाय रसों का क्रमशः प्रयोग करना चाहिए तिक्त रस आम पित्त का पाक करता है। इसके बाद मधुर रस प्रयोग से गुरुता, स्निग्धता एवं मधुरता से पक्व पित्त का शमन होता है अन्त में कषाय रस के प्रयोग से रूक्षता एवं पित्त की द्रवता नष्ट होती है।

इसी प्रकार वात रोगों में लवण, अम्ल एवं मधुर रस का क्रमशः प्रयोग करने से लवण क्लेदी होने से, वात विबन्ध को, उष्णता से शीतलता को तथा गुरु होने से लघुता को दूर करता है। इसके बाद अम्ल के प्रयोग से अपने तीक्ष्ण गुण से स्रोतों का शोधन करता है तथा स्निग्ध एवं उष्णत से विमार्ग में गई वात का अनुलोमन करता है। अन्त में मधुर रस के प्रयोग से अपने गुरु, स्निग्ध एवं पिच्छिल गुणों के कारण एवं स्निग्ध होने से वात के लघु, विशद एवं रूक्ष गुणों का शमन करता है।

प्रश्न :– स्रंसन एवं भेदन में अन्तर स्पष्ट करो?

उत्तर :– स्रंसन– सुखपूर्वक दोषों को बाहर निकालने वाले द्रव्य स्रंसन कहलाते हैं, ये अति मृदु एवं अति तीक्ष्ण भी नहीं होते हैं जैसे एलवा, सनाय। मृदु की अपेक्षा कुछ तीव्र क्रिया होती है अतः पक्व अपक्व दोनों ही मल निकालते हैं।

भेदन– ये तीक्ष्ण विरेचक होते हैं। इनकी क्रिया भी तीव्र होती है। ये आंतों में दाह एवं मरोड़ के साथ पतला मल बाहर निकालते हैं जैसे जयपाल, स्नुही, इन्द्रायण, त्रिवृत आदि।

प्रश्न :– संक्षिप्त उत्तर लिखो? 1. मूत्र विरजनीय द्रव्यों की क्रिया, 2. अष्ट वर्ग के प्रतिनिधि, 3. पञ्च पल्लव गुणकर्म, 4. पञ्च वल्कल, 5. शारंगधरोक्त भेषज सेवन काल।

उत्तर :– मूत्र विरजनीय द्रव्यों की क्रिया– जो द्रव्य मूत्र के विकृत वर्ण को दूर कर प्राकृत अवस्था में लावे वे मूत्र विरजनीय कहलाते हैं, पद्म, नलिन, कुमुद, शतपत्र, मुलेठी, प्रियंगु, धाय के फूल ये सभी शीतवीर्य होते है। पित्त के कारण मूत्र में विकार उत्पन्न होते हैं। अतः ये सभी द्रव्य पित्त शान्त कर मूत्र को प्राकृतिक वर्ण प्रदान करते हैं।

अष्ट वर्ग के प्रतिनिधि– अष्टवर्ग का प्राप्त होना कठिन होने से इनके स्थान पर प्रतिनिधि द्रव्य ग्रहण करते हैं।

भाव प्रकार के अनुसार-

भाव प्रकाश	**अन्य मत**
जीवक ऋषभक=विदारीकन्द	जीवक=बहमन, गिलोय
मेदा, महामेदा=शतावर	ऋषभक-बहमन लाल या वंशलोचन
काकोली, क्षीरकाकोली=अश्वगन्धा	मेदा-सालममिश्री
ऋद्धि वृद्धि=वाराहीकन्द	महामेदा=शाकुल मिश्री
	काकोली=काली मूसली
	क्षीरकाकोली=श्वेत मूसली
	ऋद्धि=बला, उटंगन
	वृद्धि=शालमपंजा बीजबन्द

पञ्च पल्लव एवं पञ्च वल्कल के गुण :- आम, जामुन, कैथ, बीजपूर एवं बिल्व इन पांचों के पत्ते एकत्र ग्रहण करने पर पञ्च पल्लव कहे जाते हैं। इनका उपयोग गन्धकर्म के लिए किया जाता है, अर्थात् दुर्गन्ध नाशन के लिए होते हैं। गुणकर्म की दृष्टि से इनका **रस** कषाय **गुण** लघु रूक्ष **वीर्य** उष्ण, **विपाक** कटु तथा कफवात शामक होते हैं। इनका विशेष कर्म दुर्गन्ध नाशन हैं। स्नेह आदि की दुर्गन्ध दूर करने के लिए भी प्रयुक्त होते हैं।

पञ्च वल्कल :- यद्यपि चरक, सुश्रुत एवं वाग्भट सभी ने इनका उल्लेख किया हैं-जिनमें चरक ने बट, गूलर, पिलखन, पीपल एवं कपीतन (पारस पीपल) लिखा हैं सुश्रुत में कपीतन के स्थान पर मधूक एवं वाग्भट ने वेतस लिखा है। ये रस में कषाय तिक्त, गुण में लघु रूक्ष, वीर्य शीत, दोषकर्म- पित्त कफ एवं रक्त शामक हैं कर्म की दृष्टि से वर्ण्य योनि रोगहर, मेदोहर, शोथहर, ग्राही भग्न संधान कर विसर्पहर होते हैं।

शारंगधरोक्त भेषज सेवन काल :- शारंगधर के अनुसार औषध सेवन काल को पांच रूपों में व्यक्त किया है

1. सूर्योदय, 2. दिन के भोजन से पूर्व, 3. सांयकाल भोजन के ग्रास के साथ, ग्रासान्तर एवं अधोभक्त में भोजन काल ये समय है, 4. मुहुर्मुहू कुछ रोग ऐसे होते हैं जिनमें बार बार औषध दी जाती है, 5. निशाकाल इनके प्रयोग काल का वर्णन करते हुए लिखा है :-

प्रथम काल	**सूर्योदय** कफ एवं पित्त के उद्रेक के लिए विरेचन एवं वमन तथा लेखन के लिए।		
दूसरा काल	**दिन के भोजन** के साथ या भोजन के मध्य में	भोजन से पहले अरूचि	अपान वायु मन्दाग्नि
तीसरा काल	**सांयकाल** ग्रास के साथ	दो ग्रासों के मध्य प्राण	उदान वायु
चौथा समान	बार बार औषध देनी	एवं विकृति में तृष्णा, छर्दि, हिक्का	एवं गरविष के लिए।
पांचवा काल	रात्रि में बृंहण, लेखन एवं ऊर्ध्व जत्रु विकारों के लिए।		

प्रश्न :- सूत्र स्पष्ट करो? दन्ती रसाद्यैः तुल्यापि।

उत्तर :- दन्ती रसाद्यै तुल्यापि चित्रकस्य विरेचनी। वाग्भट

प्रभाव का वर्णन करते हुए वाग्भट ने स्पष्ट किया है कि जब द्रव्य को बनाने वाले महाभूत तथा उसके रस, वीर्यादि के बनाने वाले महाभूतों का संगठन भिन्न हो तो इस विचित्र संयोग से बनने वाले द्रव्य अपने रसादि के अनुकूल कार्य नहीं करते तब इस संयोग के प्रभाव को विचित्र प्रत्ययारब्ध कहते हैं।